भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार ...

Model Answer Key

Date : 04/03/2020

Part-A

3 Marks

A- अटल बाल मित्र योजना–

– 2011 में प्रारम्भ

– महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण की स्थिति में सुधार लाना तथा आंगनवाड़ी केन्द्रों के प्रभावी संचालन के लिए।

– इसमें कोई भी दानदाता किसी कुपोषित बच्चे को गोद ले सकते है या आंगनवाड़ी में धनराशि या कोई सामग्री दान कर सकते है।

B- एकलव्य पुरस्कार–

– 1994 में प्रारम्भ।

– 19 वर्ष से कम आयु के मध्य प्रदेश निवासी ऐसे खिलाड़ी को दिया जाता है जिसने पिछले 5 वर्षो में न्यूनतम 2 वर्षो में अन्तर्राष्ट्रीय या राष्ट्रीय प्रतियोगिता में राष्ट्र का प्रतिनिधित्व किया हो या पदक प्राप्त किया हो।

– अधिकतम 15 खिलाड़ियों को दिया जाता है।

C- पिथौरा भित्ती चित्र–

– म.प्र. के झाबुआ, अलीराजपुर एवं राजस्थान व गुजरात में प्रचलित।

– मुख्यतः भील जनजाति में प्रचलित।

– इसमें दीवारों पर अधिकांशतः काजल रानी की कथा एवं घोड़े का चित्र बनाया जाता है।

– चित्र बनाने वाले को लिखिन्दरा कहते है।

– प्रसिद्ध चित्रकार– पेमा फाल्या, जनगणसिंह श्याम।

D- हिंगोट मेला–

– म.प्र. के इन्दौर के गौतमपुरा क्षेत्र में।

– दीपावली के अगले दिन अर्थात् पड़वा के दिन रूणजी के तुर्रा एवं गौतमपुरा के कलगी के मध्य होने वाला पारम्पारिक युद्ध।

– इस युद्ध में हिंगोट नामक हथियार का प्रयोग होता है।

E- टंट्या भील–

– जन्म– 1882, 1888 में फांसी।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

– 1857 में निमाड़ क्षेत्र के क्रांतिकारी।

– बहन सुरेखा से राखी बंधवाते हुए इन्हें गिरफ्तार किया गया।

– भारतीय आदिवासी इन्हें मामा कहते है।

F- कसरावद–

– पुरातात्विक स्थल।

– खरगौन जिले में नर्मदा के तट पर।

– बी.आर. कारन्दीकर के नेतृत्व में उत्खनन।

– यहाँ ब्रम्ह्मी लिपी से लिखित मृतभाण्ड, खिलौने, हांथी दांत के टुकड़े, बौद्ध स्तूप आदि प्राप्त हुए।

G- विष्णु चिंचालकर–

– जन्म– 1917, मृत्यु– 2000

– देवास जिले में जन्मे चित्रकार, देवलालीकर जी के शिष्य।

– सहपाठी– एम.एफ.हुसैन एवं श्रीधर बेन्द्रे।

– नई दुनिया से संबंधित, अंतर्राष्ट्रीय बेरियल पुरस्कार मिला एवं म.प्र. का शिखर सम्मान प्राप्त।

H- खम्ब स्वांग–

– कोरकु जनजाति का खम्ब के आस–पास किया जाने वाला नाटक।

– इसके तीन रूप है– 1. झेरी 2. पारडी 3. खम्ब।

– यह शारदेय नवरात्र से प्रारम्भ होकर देव प्रबोधनी एकादशी तक चलता है।

– मेघनाथ की याद में आयोजित।

– मुख्य वाद्य यंत्र– झांझ और मृदंग।

I- हरिशंकर परसाई–

– प्रसिद्ध व्यंगकार।

– जन्म– 1924 होशंगाबाद के जमानी ग्राम में। मृत्यु– 1995।

– वसुधा पत्रिका, प्रहरी समाचार पत्र से जुड़े ।

– रचनाएं– रानी नागफनी की कहानी, भूत के पांव पीछे, शिकायत मुझे भी है, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, हंसते है रोते है। आदि।

– पुरस्कार– पद्मश्री, साहित्य एकेडमी, मध्य प्रदेश का शिखर सम्मान, शरदजोशी सम्मान एवं जबलपुर वि.वि. से डी. लिट की उपाधि।

J- म.प्र. में कागज उद्योग केन्द्र–

– नेपा नगर– अखबारी कागज का केन्द्र।

– होशंगाबाद– सिक्योरिटी पेपर मिल।

– अमलाई– ओरिएंट पेपर मिल।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

– इन्दौर– महीन कागज।

– बानमौर– फिल्टर पेपर।

इसके अलावा कागज और पुठ्ठा बनाने की इकाईयां– सीहोर, मण्डीद्वीप, छिंदवाड़ा में है।

K- तवा नदी–

– नर्मदा की सहायक नदी।

– महादेव पर्वत की कालीभीत पहाड़ी से निकलती है।

– होशंगाबाद जिले में नर्मदा से मिलती है।

– इटारसी के निकट तवा परियोजना है।

– सहायक नदी– देनवा, मालिनी, सुखतवा।

L- शाहपुर तवा कोयला क्षेत्र–

– यह बैतूल तथा होंशाबाद में तवा नदी की घाटी में।

– पाताखेड़ा एवं छोटी छोटी खदानें– सोनादा, बुल्हारा, ब्रम्ह्माणपारा आदि खदानें है।

– यहां का कोयला सारणी ताप विद्युत ग्रह में भेजा जाता है।

M- बी.आर. दवे समिति–

– 1983 में गठित।

– जिला पुनर्गठन समिति।

– इनकी सिफारिश पर 1998 में 16 जिलों की अनुशंसा की किन्तु 10 जिले बने।

N- महात्मा गांधी राज्य ग्रामीण विकास संस्थान–

– म.प्र. के जबलपुर शहर में स्थित।

– राज्य में ग्रामीण एवं जनजाति विकास को समर्पित संस्थान।

– 1964 में स्थापित, 1967 में म.प्र. सरकार ने इसका कार्यभार अपने हाथों में ले लिया।

– यह एक प्रशिक्षण संस्थान है, जो राज्य के सेवकों को प्रशिक्षण देता है।

O- मालवा के पठार की तीन प्रमुख चोटियां–

1. सिगार (861 मीटर)।
2. जानापाव (854 मीटर)।
3. धजारी (816 मीटर)।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

6 Marks

A- महाराजा छत्रसाल–

– शौर्य व साहस की भूमि बुन्देलखण्ड को मुगलों से आजाद कराने वाले महाराज छत्रसाल का जन्म 1649 ई. में हुआ। अपने पिता चम्पत राय की मृत्यु के बाद 12 वर्ष की उम्र से संघर्ष प्रारम्भ किया। प्रारम्भ में औरंगजेब की सेना में शामिल हुए, परन्तु शिवाजी की प्रेरणा एवं अपने गुरू प्रणनाथ जी के आशिर्वाद से निरंतर संघर्ष कर पन्ना राज्य की स्थापना की। 1687 में राज्याभिषेक किया, उनके राज्य विस्तार की झलक निम्न. कविता से मिलती हैंः–

''इज युमना उत नर्मदा, इत चंबल उत टोंस
छात्रसाल से लरन की, रही न काहू होंस।''

औरंगजेब की मृत्यु के बाद बाजीराव की सहायता से विभिन्न क्षेत्रों को जीता और बाजीराव को सागर, गढ़ाकोटा, झांसी आदि उपहार में दिये, इनकी पुत्री मस्तानी का विवाह बाजीराव से हुआ।

बुन्देलखण्ड केसरी के नाम से प्रसिद्ध छात्रसाल ने 52 युद्ध लड़े। इनकी याद में छतरपुर में छतरसाल विश्वविद्यालय एवं दिल्ली में छत्रसाल स्टेडियम का निर्माण हुआ। 1731 में इस यौद्धा की मृत्यु हो गई।

B- म.प्र. की प्रमुख गुफाएंः–

– म.प्र. आदिमकाल से लेकर आधुनिक काल तक विभिन्न प्रकार की गुफाओं का उल्लेख मिलता हैं, जिनमें हिन्दु एवं बौद्ध संस्कृतियों का संगम दिखाई देता है। प्रमुख गुफाएं निम्न हैंः–

1. **भीम बेटका**– रायसेन जिला, 2003 में विश्व विरासत सूची में शामिल प्राग्ऐतिहासिक काल के रेखा चित्र प्राप्त होते है।
2. **मृगेन्द्र नाथ की गुफाः**– भीम बेटका के समान ही प्राग्ऐतिहासिक काल के चित्र मिलते है।
3. **उदयगिरी (विदिशा)**ः– गुप्तकालीन इन गुफाओं में बराह की विशाल प्रतिमा और जैन धर्म से संबंधित गुफाएं नम्बर–1 और नम्बर 20 है।
3. **भ्रतहरि की गुफाः**– इसका निर्माण परमार वंश के राजाओं ने किया। यहीं पर गोपीचन्द की भी गुफा है।
4. **बाघ की गुफाएं(धार)**ः– 5 गुफाएं है। चित्र–बौद्ध धर्म एवं लौकिक जीवन से संबंधित है।
5. **पाण्डव गुफाएं(पंचमढ़ी)**ः– यह पाण्डवों के अज्ञातवास का स्थल रहा है।
6. **शंकराचार्य की गुफाएं (खण्डवा)**ः– यहां शंकराचार्य ने शिव अराधना की।
7. **मारा की गुफाएं (सीधी)**ः– यहां बौद्ध कालीन चित्र मिलते है।
8. **लोहानी गुफा (माण्डु)**ः– यहां 11 वीं 12 वीं सदी के शिव पार्वती के चित्र मिलते है।

इसके अलावा धर्म राजेश्वर गुफा मंदसौर, काजलरानी की गुफा ओंमकारेश्वर, जटाशंकर गुफा पंचमढ़ी, आदमगढ़ गुफा होशंगाबाद आदि है। ये गुफाएं म.प्र. के इतिहास संस्कृति और कला की महत्ता की प्रदर्शित करती है।

C- म.प्र. में वस्त्र उद्योग–

उत्तर प्रारूप– भूमिका–

म.प्र. में वस्त्र उद्योग की स्थिति

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

वितरण

पारम्पारिक वस्त्र निर्माण केन्द्र

वस्त्र निर्माण उद्योग समस्याएं

वस्त्र निर्माण को बढ़ावा देने वाले

संस्थान / कार्यक्रम

सुझाव

म.प्र. में देश का 4.5 प्रतिशत कपास उत्पादित होता है। इसका प्रमुख केन्द्र दक्षिणी पश्चिमी म.प्र. है। म. प्र. में प्रथम सूती मिल 1906–07 में बुरहानपुर में स्थापित की गई। इसके बाद मालवा यूनाइटेड मिल 1907–08 में इन्दौर में स्थापित की गई।

इसके अलावा इन्दौर, उज्जैन, धार, देवास, ग्वालियर, छिंदवाड़ा आरि में कुल 65 मिले म.प्र. में है। इसके अलावा कुटीर एवं ग्रामोद्योग के क्षेत्र में हथकरघे लगे हुए है। खादी उत्पादन के कुल 11 कारखाने है। म.प्र. में ऊनी वस्त्र पीथमपुर, धार मालनपुर में तैयार किये जाते है। जबकि कृत्रिम रेशा ग्वालियर, इन्दौर, नागदा, उज्जैन, देवास आदि स्थानों पर निर्माण होता है।

पारम्पराकि रूप से साड़ी निर्माण के लिये चंदेरी, महेश्वर, बाद्य प्रिंट तथा अठाना प्रिंट प्रसिद्ध है।

म.प्र. में वस्त्र निर्माण की समस्या कुशल मजदूर, वेतन विरूंगति, बिजली आपूर्ति, कच्चा माल, वित्त एवं विवरण है।

इसके लिये म.प्र. वित्त निगम इन्दौर एवं म.प्र. वस्त्र उद्योग निगम इस उद्योग को बढ़ावा देने के लिये प्रयासरत है।

D- म.प्र. सरकार द्वारा पर्यटन विकास हेतु किये गये प्रयासः–

– म.प्र. में 2016–2017 में 15.05 करोड़ पर्यटक आए जो पिछले वर्ष की तुलना में दोगुने थे। जिसमें से 3 लाख 63 हजार विदेशी पर्यटक है। इस तीव्र गति से पर्यटन विकास के क्षेत्र में सरकार की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

म.प्र. सरकार ने पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 1978 में म.प्र. पर्यटन विकास निगम की स्थापना की इसके अंतर्गत 724 विरासत ईमारतें, 52 आवासी इकाईयां है। इसके अलवा सरकार पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विभिन्न उत्सवों व समारोहों का आयोजन करती है। जैसे–कालीदास समारोह तुलसी उत्सव, लोकरंजन समारोह इत्यादि।

2015–16 में म.प्र. सरकार ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया तथा 2016 में नवीन पर्यटन नीति की घोषणा की इसका उद्देश्य सन्तुलित व समेकित पर्यटन विकास इसके तहत निम्न. कदम उठाये गएः–

1. सार्वजनिक निजि भागीदारी।
2. पंजीयन एवं मुद्रांक शुल्क में छूट।
3. इको व सहासिक पर्यटन को बढ़ावा।
4. पर्यटकों से फीडबैक।
5. युवाओं के लिए रोजगार उन्मुखी कौशल विकास एंव पर्यटन प्रशिक्षण कार्यक्रम
6. प्रचार के लिए हिन्दुस्तान का दिल देखों नारा।

इसके अतिरिक्त प्रदेश की सरकार ने 10 वर्ष तक पर्यटन केन्द्र को बिक्री कर से मुक्त कर दिया है एवं 19 स्थलों पर 24 करोड़ की सब्सीडी प्रदान की है। इसके अतिरिक्त पहली बार शासन ने कृत्रिम जल द्वीप हनुमन्तिया का निर्माण किया है। जो आगे बरगी, गांधी सागर, तवा, बाण सागर में भी निर्मित किए जाएंगे।

जनवरी 2018 में केरल की तर्ज पर बुटिक होटल खोले जाएंगे। मड़ई, कन्हा, भोपाल में फाईव स्टार होटलों की स्थापना करेगी। सरकार के प्रयासों का ही परिणाम है कि म.प्र. को 2017 में सबसे सर्वश्रेष्ठ पर्यटन राज्य का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

E- माण्डू की वास्तुकला पर संक्षिप्त टिप्पणीः–

– म.प्र. की आनंद नगरी माण्डु हिन्दु व मुस्लिम शासकों की कर्म स्थली रही है। धार जिले में स्थित यह स्थल प्राकृतिक सौन्दर्य से घिरा हुआ है।

हुशंगशाह द्वारा निर्मित माण्डु का किला जीर्ण–शीर्ण अवस्था में मिलता है। माण्डु में गुंजताल व कपूरताल के मध्य जहाज महल बना हुआ है, इसमें विस्तृत छत, विशाल सभा भवन और चारों तरफ मनोरम् जल कुण्ड है। इसलिए इसे जहाज महल की संज्ञा दी गई है। जहाज महल के निकट ही हिण्डोला महल है। जिसका आकार झूले के समान है। इसकी मुख्य विशेषता हाथी चढ़ाव है।

हिण्डोला महल के पीछे चम्पा बाबड़ी है, बड़ी गुम्बद युक्त यहां जामा मस्जिद है। इसके सामने अशर्फी महल खंडहर अवस्था में है। इसी के निकट संगमरमर से बना हुंशगशाह का मकबरा है।

रूपमति महल, बाजबहादुर व रूपमति की प्रेम कथा का गवाह है, जिसका प्लास्टर कई जगह से उखड़ चुका है। परन्तु रंगीन पत्थरों की पच्छीकारी की गई है। यहीं पर रेवा कुल्ड, दाई का महल स्थित है।

माण्उडु के पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये प्रतिवर्ष मालवा उत्सव का आयोजन किया जाता है।

F- म.प्र. के प्रमुख दाल उत्पादक क्षेत्रः–

– म.प्र. देश में दाल उत्पादक राज्यों में प्रमुख स्थान रखता हैं। राज्य के लगभग 20.21 प्रतिशत में दालें बोई जाती है। 1955–96 में दालों का कुल उत्पादन म.प्र. 20.7 लाख टन था जो 2019–17 में 72.11 लाख टन हुआ। 2015–16 की तुलना में 27 प्रतिशत दालों का उत्पादन अधिक हुआ है।

दलहन फसलों के अंतर्गत अरहर, उड़द, मूंग आदि खरीफ में जबकि चना, मसूर, मटर रबी में बोई जाती हैं। चना राज्य की प्रमुख दलहन फसल है और म.प्र. इसके उत्पादन में भारत में पहले स्थान पर है। 2016–17 में चना का उत्पादन 37.7 लाख टन हुआ है।

चना बुन्देलखण्ड, मालवा के पूर्वी भाग व नर्मदा घाटी के मध्य क्षेत्र में होता है। वर्तमान में सागर प्रथम स्थान पर है। राज्य में अरहर दूसरे नम्बर की दलहन फसल है। म.प्र. में देश का लगभग 14 प्रतिशत अरहर उत्पादन होता हैं। अरहर का उत्पादन मुख्यतः सतपुड़ा क्षेत्र, विंध्य क्षेत्र, नर्मदा बेसिन में होता है।

अरहर के अतिरिक्त मूंग, मोढ़, मसूर भी राज्य में पैदा की जाती है। दलहन उत्पादन प्रोटीन की मांग को पूरा करता है। साथ ही साथ म.प्र. के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

G- भोपाल गैसत्रासदी पर जानकारीः–

– भारत के म.प्र. राज्य के भोपाल शहर में 3 दिसम्बर 1984 को एक भयानक औद्योगिक दुर्घटना हुई। जिसे भोपाल गैस त्रासदी या भोपाल गैस काण्ड के नाम से जाना जाता है।

भेपाल स्थित यूनियन कार्बाइड नामक कम्पनी से मिथाइल आइसोसाइनाइट जहरीली गैस का रिसाव हुआ जिससे लगभग 3787 लोगों की जान गई तथा बहुत सारे लोग अनेक तरह की शारीरिक अपंगता से लेकर अंधेपन के भी शिकार हुये।

भोपाल गैस त्रासदी होने के प्रमुख कारण निम्न हैंः–

1. सुरक्षा उपकरणों का मानक स्तर का पालन न करना।
2. फ्रीजिंग प्लांट का बंद होना।
3. गैस का निस्तार आदि।

भोपाल गैस त्रासदी से होने वाले प्रभाव वर्तमान में भी दिखाई देते है।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

H- मध्य–भारत के पठार पर संक्षिप्त टिप्पणीः–

– इस प्रश्न का उत्तर हम निम्न प्रकार से लिखेंगें–

पहले भूमिका– मध्य प्रदेश के उत्तर–पश्चिम में मध्य भारत का पठार, राजस्थान और उत्तर प्रदेश की सीमा से लगा हुआ है।

विस्तार– 24^0 से 26^0 48′ उत्तरी अक्षांश तथा $78^0$50′ से $79^0$10′ पूर्वी देशांतर तक।

मध्य प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 10.7

प्रागऐतिहासिक काल के प्रमाण मिलते है। नागवंश की राजधानी पद्मावती रही है और हूण शासक मिहिरकुल ने शासन किया। गुर्जर प्रतिहार और तोमर वंश के शासक ने यहां शासन किया। अंत में मुगल मराठा का शासन थां 1956 में यह म.प्र. का हिस्सा बन गया।

जिले– भिण्ड, मुरैना, ग्वालियर, शिवपुरी, मन्दसौर, नीमच आदि।

मिट्टी– जलोढ़। चम्बल नदी के अवनालिका अपरदन से मृदा समस्या है।

नदियां– चम्बल, सिंध, पार्वती आदि।

वन– कटीले वन, खैर, बबूल, खैर से कत्था निकाला जाता है।

कृषि– सरसों, गेहूँ, मक्का।

खनिज– चूना पत्थर, चीनी मिट्टी।

उद्योग– मालनपुर (भिण्ड), बानमौर, डबरा, ग्वालियर में स्थित मुख्य उद्योग शक्कर, कृत्रिम रेशा, बिस्किट आदि।

पर्यटन स्थल– ग्वालियर का किला, माधव राष्ट्रीय उद्यान, मोती महल आदि।

जनजाति– सहारिया।

संस्कृति– यहां ब्रज बोली, बोली जाती है। रामलीला मुख्य नाट्य है। यहां पीर बुधान, नागा जी का मेला एवं ग्वालियार मेला आदि आयोजित होते है।

I- माखनलाल चतुर्वेदीः–

– भारत की आत्मा, जिन्होंने अपनी लेखनी से साहित्य रचना के साथ–साथ स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा प्रदान की। इनका जन्म 4 अप्रैल 1889, होशंगाबाद के बाबई में हुआ। अध्यापक बने, गांधी जी के आंदोलनों से प्रभावित होकर अपना समस्त जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया। गंगेश शंकर विद्यार्थी के सम्पर्क में आकर पत्रकारिता का भी कार्य किया।

इन्होंने कर्मवीर, प्रताप, प्रभा नामक समाचार पत्रों का सम्पादन किया। राष्ट्र के लिए कई बार जेल गये और बिलासपुर जेल में अपनी कालजयी रचना 'पुष्प की अभिलाषा' लिखी।

इन्हें 1963 में पद्म भूषण मिला जो इन्होंने 1967 में वापिस कर दिया। सागर वि.वि. ने डॉक्टरेट की उपाधि दी। 30 जनवरी जनवरी, 1968 को खण्डवा में मृत्यु हो गई।

रचनाएं–

काव्य– हिमक्रीटनी, हिम तरंगिनी, युगचरण, समर्पण आदि।

निबंध– अमीर इरादे, गरीब इरादे, पॉव–पॉव आदि।

नाटक– कृष्ण–अर्जुन युद्ध

कहानी– कला का अनुवाद

भाषण– चिन्तक की लाचारी।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

संस्मरण– समय के पॉव

इन्होंने सहज, सरल भाषा का प्रयोग किया, जिसमें अंग्रेजी उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया है। हिन्दी में उल्लेखनीय योगदान के कारण म.प्र. सरकार प्रतिवर्ष कवियों को माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार प्रदान करती है।

J- म.प्र. के लोक गायन पर जानकारीः–

– म.प्र. एक बहुरंगी व बहुआयामी संस्कृति वाला प्रदेश हैं। भारत के केन्द्र में होने के कारण यहां के लोक गायक में सभी राज्यों की संस्कृति की साजी झलक मिलती है। साथ ही जन जातीय लोक गायन, गायन की मौलिकता प्रदान करता हैं म.प्र. में लोक गायन की परम्परा अत्यंत समृद्ध है एवं प्रत्येक पर्व, अनुष्ठान, ऋतु और संस्कार संबंधी लोक गीतगाने की परम्परा प्रत्येक अंचल में दिखाई देती है जो क्षेत्रवार रूप से निम्न हैं–

मालवा–

1. भर्तृहरि गायन– नाथ सम्प्रदाय के लोग भर्तृहरि के वैरागी हो जाने की कथा एवं उनके भजनों को सारंगी, सितार व तबले की धुन पर गाते है। प्रसिद्ध गायिका सूरज बाई खाण्डे है।
2. निर्गुड़िया– इसमें कबीर के अध्यात्मक की छाप वाला गायन इकतारे व मजीरे की धुन पर गाया जाता है। इसके गपसिद्ध गायक प्रहलाद सिंह टिपड़या हैं।
3. हीड़ गायन– सावन माह में झूले पर झूलती हुयी किशोरियों के मध्य एक प्रकार प्रतिस्पर्धात्मक गायन है।
4. वर्षाती वार्ता– ऋतु गीत है जो स्त्रियां गाती है।
5. संजा गीत– बिना वाद्य तंत्र के मूलतः किशोरियों के द्वारा पितृपक्ष में इसका गायन किया जाता है।

इसके अलावा तेजाजी गायन, तीज गायन, मालवीय गायन आदि है।

निमाड़ क्षेत्र–

कलगी तुर्रा– यह कलगी व तर्श ..... के अखाड़े के बीच प्रतिस्पर्धा गायन हैं जो मालवा, बुन्देलखण्ड में भी दिखाई देता है। प्रसिद्ध कलाकार सुमेर सिंह एवं मनसा राम है।

मसाड्या (कामाखोज)– मृत्युगीत है जो छांज, मंदगा व इकतारे के साथ समूह में गाया जाता है।

सिंधाजी गायन– सिंधाजी की रचनाएं को मडंग व छांज के साथ गाया जाता है। इसके प्रसिद्ध गायक दगड़ गप्पल और जीवंता खेड़े है।

इसके अतिरिक्त निमाड़ में गरबा, बाघपंथी, कांगा गायन प्रचलित है।

बुन्देलखण्ड–

आला– जगनिक की रचना पर आधारित, वीर रस प्रधान काव्य, प्रायः वर्षा ऋतु में ढोलक, नगाड़े व टिमकी के साथ गया जाता है।

बम्बुलियां– स्त्री–पुरूष द्वारा प्रश्नोत्तर शैली में गाया जाता है।

फांग–ईसुरी की रचनाओं पर आधारित होली से लेकर पंचमी तक गाया जात हैं

दिवारी– दिपावली के अवसर पर ग्वाल समाज द्वारा ढोलक, बांसुरी की धून पर नृत्य के साथ गायन किया जाता है।

इसके अलावा बुन्देलखण्ड में बैरायता, जगदेवा, बसदेवा आदि प्रचलित है।

बघेलखण्ड–

बिरहा– श्रृंगार परख विरह गीत बिना यंत्र के ऊँचे स्तर में सवाल–जवाब के रूप में गाया जाता है।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

विदेशियां– विरह व मिलन की अभिलाषा का यह गीत, लम्बी व गंभीर रागों में गड्रियों, तेली, कोटवार आदि जाति के लोगों द्वारा गया जाता हैं।

इसके अलावा बघेलखण्छड में काम, बंसदेवा आदि गायन प्रचलित है। लोग गायन, लोक जीवन की अभिव्यक्ति का एक माध्यम है जो जीवन के प्रति उत्साह को प्रदर्शित करता है तथा समाज में सौहार्द्र व समरसता की भावना को प्रेरित करता है।

K- म.प्र. में सहकारी आंदोलन के सफल न होने के कारणाः–

– सहकारिता से सपन किसानों ने इसे संपन्नता का साधन बना लिया है।
– विभिन्न राज्यों में सहकारिता कानून में भिन्नता।
– ऋण के अतिरिक्त अन्य पक्षों की अपेक्षा।
– सहकारी समितियां केवल उत्पादककर्ता को ऋण देती है।
– वित्तीय साधनों की कमी।
– सहकारी समिति व्यवसायिक सिद्धांतों की उपेक्षा करती है।
– यह राजनैतिक दलों के चुनाव में योगदान देती है।

अथवा

बेगा, जनजाति पर जानकारी–

यह द्रविण परिवार की अत्यन्त पिछड़ी जाति हैं। यद्यपि यह गोड़ों की उपजाति मानी जाती थी परन्तु कुछ समय से इनकी अपनी विशेषताओं के कारण इन्होंने एक अलग जनजाति का रूप ले लिया हैं। यह म.प्र. के पूर्वी क्षेत्र विशेषकर मण्डला, बालाघाट, डिण्डौरी में मिलती है। इनकी सर्वाधिक जनसंख्या मण्डला के बैगाचक नामक स्थान पर है।

उपजाति– नारोतिया, भरोजिया, विंजवार, रेमेना, नाहर, काड़मैना, बैगा में विंजवार जमीनदार होते है।
शारीरिक बनावट– काला रंग, त्वचा शुष्क व रूखी, लम्बे बाल व नाक चपटी होती है।
निवास– बैगाओं के घर बांस, मिट्टी व घास पूरा से बने होते है।
वेषभूषा– पुरूष लगोंटी और कमीज पहनते है, स्त्रिया धोती पहनती है। सर्वाधिक गुदना प्रिय जाति है।
मोटे अनाज, कंद मूल, फल व मांस खाते है, सुबह का भोजन वासी, दोपहर का भोजन पेज और रात्री का ब्यारी कहलाता है।
अर्थव्यवस्था– ये झूम खेती करते है जिसे वेबार या पोडू कहते है।
समाज– पित्र सत्तात्मक सग्रोत्री विवाह वर्जित है, बाल विवाह नहीं है। वधु मूल्य, विधवा विवाह प्रचलित है।
पति–पत्नि का एक साथ मिलकर तिनका तोड़ना तलाक का संकेत माना जाता है। 6 प्रकार के विवाह होते हैं–
1. मगनी 2. उठवा 3. चोर 4. पैदुल 5. लमसेना 6. उधारिया।
धर्म– बैगा के प्रमुख देवता बूढ़ा देव है जो साज के वृक्ष में रहते है। गांव के देवता ठाकुर देव है, बीमारियों से लड़ने के लिये दूल्हा देव है।
नृत्य– कर्मा, शैला, परधोनी, फाग, बिलगा।

वैगा एक कला प्रिय जाति है जो अत्याधिक सादा जीवन जीते है। शिक्षा की दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ी जनजाति हैं। अतः आवश्यकता है कि अंध विश्वास से मुक्त कर इन्हें समाज की मुख्य धारा में लाया जाये इसलिये म.प्र. सरकार ने बैगाचक के बैगाओं को 1999 से शासकीय सेवाओं में लेना प्रारम्भ कर दिया है, और उच्च श्रेणी के पदों पर भी नियुक्ति के प्रयास भी किये जा रहे है लेकिन इसके पूर्व सादा जीवन जीने वाली इस जनजाति को आधुनिक जीवन से परिचय कराना होगा।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

L- उज्जैन एक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक संगम स्थल है–

– उज्जैन एक प्राचीन ऐतिहासिक धरोहर स्थल तथा हिन्दुओं की आस्था का अध्यात्मक स्थल है। म.प्र. सरकार ने इसे पवित्र नगर घोषित किया है। भारत की सात पावनतम नदियों में से एक क्षिपा एवं देश के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक महाकाल इस नगर को देश का एक पवित्र तीर्थ स्थान बनाते हैं। चंड प्रद्योत, उदयन, वक्रमादित्य, कालिदास आदि अनेक भारतीय संस्कृति के उज्जवल नक्षत्रों का नाम इस नगरी के साथ जुड़ा हुआ है। इन नगर में पहुंचने पर भान होता है, मानों भारतीय संस्कृति के विशाल सागर के तट पर पहुंच गये हों और जहां तक दृष्टि पहुंचती है, वहां तक अपार जल राशि लहरा रही है।

भगवान बुद्ध का समकालीन राजा प्रद्योग अवंतिका का शासक था। महेन्द्र तथा संघमित्रा नामक उसकी दो संतानों का जन्म भी यहीं हुआ। अशोक के बाद मगध के शुंग की सत्ता का प्रारम्भ हुआ। शुंगों की सत्ता समाप्त होने के बाद यहां काष्ठवों का आधिपत्य रहा।

1. महाकाल मंदिर।
2. क्षिप्रा तट
3. उज्जैन का शाही महल कालियादह।
4. विक्रमादित्य की आराध्य देवी हरसिद्धि
5. वेधशाला
6. सिद्ध वट
7. अंकपात्।
8. भर्तृहरि की गुफा
9. गोपाल मंदिर।
10. गढ़ कालिका देवी।

अथवा

म.प्र. के गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों पर जानकारीः–

म.प्र. में ऊर्जा की बढ़ती मांग ने गैर पम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों की आवश्यकता को बढ़ा दिया है। गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत एक ऐसा तरीका है जिससे हम उपयोग में लाये जा चुके पदार्थ को पुनः उपयोग में ला सकते है। अर्थात् उसका पुनः नवीकरण किया जा सकता है। इसके तहत सौर्य ऊर्जा, बायोमास ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि इसके अंतर्गत आते है।

म.प्र. गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों की दृष्टि से अग्रणि राज्य रहा हैं म.प्र. के गैर परम्परागत स्त्रोत इस प्रकार हैं–

1. सौर्य ऊर्जा
2. सोलर कूकर
3. सोलर बोल्टिक प्लांट
4. सोलर ऊर्जा टीन्ही
5. सौर्य ऊर्जा गर्म जल संयंत्र
6. बायोमास। आदि।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

15 Marker

A- म.प्र. के प्रमुख कुटीर उद्योगः–

– कुटीर उद्योग का अर्थ हों जिसमें एक ही परिवार के सदस्य कम से कम निवेश के द्वारा परम्परागत रूप से वस्तुओं का उत्पादन करते है।

म.प्र. की कार्यशील जनसंख्या का 2 प्रतिशत भाग कुटीर उद्योगों में लगा हुआ है। जिसमें कुल 1700 करोड़ की पूंजी का निवेश हुआ है। अतः कुटीर उद्योग ग्रामीण रोजगार व प्रदेश के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हो निम्न व्यवसाय कुटीर उद्योग के तहत संचालित किए जाते है।

हथकरघा– हथकरघा मुख्यतः चंदेरी, महेश्वर, बुरहानपुर, जबलपुर, इत्यादि में स्थित है। चंदेरी व महेश्वर में साड़ियों का निर्माण होता है। जिसमें चंदेरी साड़ी को पेटेन्ट भी प्राप्त हो चुका है। म.प्र. में 33000 हथकरघे संचालित किए जा रहे है।

रेशम– इसके लिए रेशम कीट पालन उसमें से धागा निकालना व बुनाई करना है इसके प्रमुख केन्द्र बालाघाट बारा सिवनी व मुंगावली में स्थित है।

लकड़ी के समान– लकड़ी को चीरने का प्रमुख केन्द्र जबलपुर है तथा लकड़ी से लुग्दी बनाने का कार्य ग्वालियर उज्जैन व इन्दौर में होता है। लकड़ी के खिलौने रीवा, ग्वालियर, होशंगाबाद में बनते है।

चमड़े के समानः– ग्वालियर, दमोह, देवास में स्थित है। इसके कारखाने इससे बेग, बेल्ट इत्यादि तैयार किए जाते है।

तंबाकू उद्योगः– जबलपुर, सागर, दमोह जहां पर तंबाकू की पैकेजिंग व बीड़ी निर्माण किया जाता है।

मधुमक्खी पालनः– शहडोल उमरिया व मण्डला में मधुमक्खी पालन के द्वारा शहद व मोम उत्पादित किया जाता है।

बांस के समानः– बांस की टोकरी, इत्यादि समान सतना, शहडोल, मण्डला, बालाघाट इत्यादि में किया जाता है।

इसके अलावा बटुआ व जरीदारी का कार्य भोपाल में किया जाता है। विभिन्न स्थानों पर अचार, मसालों, दलिया, मिट्टी का बर्तन इत्यादि का उत्पादन कुटीर उद्योग द्वारा किया जाता है।

म.प्र. सरकार ने कुटीर उद्योग को बढ़ावा देने के लिए निम्न संस्थान स्थापित किएः–

– हथकरघा एवं हस्तशिल्प
– म.प्र. खादी एवं ग्राम उद्योग बोर्ड
– संत रविदास हस्तशिल्प एवं हथकरघा विकास निगम।
– रेशम बोर्ड
– म.प्र. माटी कला बोर्ड

इसके अलावा एकीकृत क्लस्टर विकास योजना, एकल खिड़की प्रणाली, प्र.म.रोजगार सृजन योजना, कारीगर प्रशिक्षण योजना इत्यादि प्रारम्भ की गई। प्रदेश की सरकार ने स्वयं सहायता समूह द्वारा 31 हजार लोगों को प्रशिक्षित किया तथा 150 करोड़ मूल्य की वस्तुओं का उत्पादन किया। म.प्र. सरकार के इन प्रयासों से कुटीर उद्योग का भविष्य सुनहरा दिखाई देता है।

अथवा

म.प्र. के कृषि–जलवायु क्षेत्रः–

म.प्र. भारत मे सर्वाधिक कृषि वृद्धि दर करने वाला राज्य हैं यहां की कृषि विविधता का कारण यहां पाये जाने वाले 11 कृषि जलवायु क्षेत्र है।

1. **छत्तीसगढ़ का मैदान**–यह लाल–पीली मिट्टी का चावल का क्षेत्र, इसके अलावा यहां आम, चीकू, हल्दी, अदरक एवं अनानास की भी खेती होती है। 1200–1600 mm वाले क्षेत्र में बालाघाट जिला आता है।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

2. **छत्तीसगढ़ का उत्तरी–पर्वतीय क्षेत्र–** जिले–शहडोल, मण्डला, डिण्डोरी, अनुपपूर, उमरिया औरवैढन (सिंगरौली)।
मिट्टी– लाल–पीली, मध्यम काली।
कृषि – मुख्य–चावल, अन्य–आम, हल्दी, मीर्च सुगंधित एंव औषधीय हर्बल।
वर्षा– 1200–1600 mm

3. **कैमूर का पठार एवं सतपुड़ा पर्वत–** जिले– रीवा, सतना, पन्ना, कटनी, सीधि, जबलपुर, सिवनी।
मिट्टी– मिश्रित लाल व काली मिट्टी।
कृषि– मुख्य– चावल, गेहूँ क्षेत्र। अन्य–आम, अमरूद, बेर, आंवला, धनिया।
वर्षा– 100–1400 mm

4. **मध्य नर्मदा घाटी**– जिले– नरसिंहपुर, होशांगाबाद, बुधनी(सिहोर), बरेली (रायसेन)।
मिट्टी– गहरी काली, मिट्टी।
कृषि– मुख्य– गेहूँ क्षेत्र, अन्य–आम, बेर, दाल, गन्ना, अमरूद, धनिया।
वर्षा – 1200 – 1600 mm

5. **विंध्य पठार**– जिले–भोपाल, सागर, दमोह, विदिशा, सिहोर, रायसेन (बरेली को छोड़कर),आंशिक रूप से गुना
मिट्टी– मध्यम एवं गहरी काली।
कृषि– मुख्य– गेहूँ क्षेत्र, अन्य– आंवला, मौसम्बी, चीकू, पपीता, मिर्च ।
वर्षा– 1200–1400 mm

6. **ग्रिड क्षेत्र**– जिले– ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी।
मिट्टी– हल्की जलोढ़, मिट्टी।
कृषि– मुख्य–गेहूँ ज्वार क्षेत्र, अन्य– सरसों, नींबू, संतरा।
वर्षा– 800–1000 mm

7. **बुन्देलखण्ड**–जिले–छतरपुर, दतिया, टीकमगढ़, अंशतः शिवपुरी।
मिट्टी– मिश्रित लाल एवं काली।
कृषि– मुख्य–गेहूँ, ज्वार क्षेत्र, अन्य–दाल, संतरा, आंवला, करौंदा।
वर्षा– 800–1400 mm

8. **सतपुड़ा**– जिले– बैतूल, छिंदवाड़ा।
मिट्टी– छिछली काली।
कृषि– गेहूँ, ज्वार क्षेत्र, अन्य– संतरा, मौसम्बी, बेर, फूल (गेंदा)
वर्षा – 1000–1200 mm

9. **मालवा पठार**– मंदसौर, नीमच, रतलाम, उज्जैन, देवास, इन्दौर, शाजापुर, राजगढ़, आंशिक धार एवं आंशिक झाबुआ।
मिट्टी– मध्यम काली।
कृषि– कपास, ज्वार क्षेत्र, अन्य– सोयाबीन, अंगूर, चीकू।
वर्षा– 800–1200 mm

10. **निमाड़ का मैदान**– जिले– खण्डवा, बुरहानपुर, खरगौन, बड़वानी, हरदा आंशिक भाग।
मिट्टी– मध्यम काली मिट्टी।
कृषि– कपास, ज्वार।
अंगूर– आम, केला।
वर्षा– 800–1000 mm

11. **झाबुआ पहाड़ी**– जिला– आंशिक झाबुआ, आंशिक धार।
मिट्टी– मध्यम काली मिट्टी।
कृषि– कपास, ज्वार क्षेत्र, अन्य– नींबू, मौसम्बी, बेर।
वर्षा– 800–1000 mm

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

कृषि जलवायु क्षेत्र, म.प्र. में सभी प्रकार की फसलों के अनुकूल स्थिति प्रदान करते है। यही कारण है कि म.प्र. सोयाबीन, दलहन में प्रथम गेहूँ, प्याज में दूसरे स्थान पर और सर्वाधिक बार कृषि कर्मण अवार्ड जीतने वाला राज्य बन गया है।

B- म.प्र. में पंचायती राज पर एक निबंधः–

– इस प्रश्न के उत्तर को निम्न प्रकार से लिखेंगें–

भूमिका– पंचायती राज, राजनैतिक, प्रशासनिक विकेन्द्रीयकरण का माध्यम है। और महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज्य की परिकल्पना की अभिव्यक्ति हैं।

इसके पश्चात् हम म.प्र. में पंचायती राज के विकास का वर्णन करेंगें। जैसे–

1962 में पंचायती राज अधिनियम पारित किया गया। जिसमें 1981 और 1990 में संशोधन हुए।

म.प्र. में 73वें संविधान संशोधन के आधार पर 25 जनवरी 1994 को पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम लागू किया गया और 1994 में पहली बार त्रिस्तरीय चुनाव कराए गए।

इसके बाद हम पंचायतों की संरचना बताएंगे जैसे–

स्तर	व्यवस्थापिका	कार्यपालिका	
		राजनैतिक	प्रशासनिक
ग्राम पंचायत	ग्राम सभा	पंच, सरपंच	सचिव
जनपद पंचायत	सदन	अध्यक्ष, उपाध्यक्ष	जनपद विकास अधिकारी
जिला पंचायत	सदन	अध्यक्ष, उपाध्यक्ष	सीईओ, जिला पंचायत

इसके बाद हम पंचायतों की समस्याएं और उपलब्धियां लिखेंगें।

अथवा

म.प्र. जल अपवाह प्रणाली की जानकारीः–

–

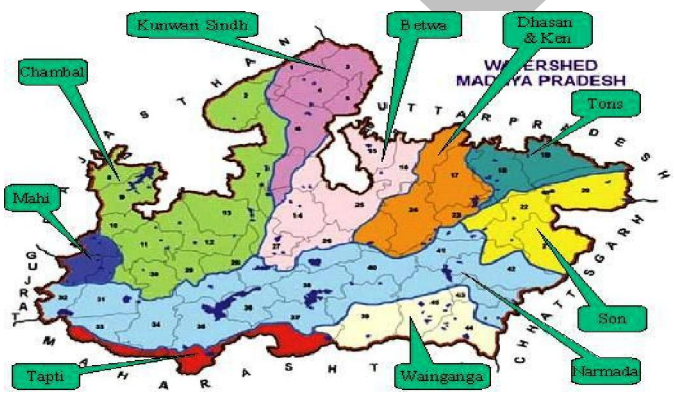

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

– इस उत्तर को हम निम्न प्रकार से लिखेगें–

भूमिका– म.प्र. भारत का हृदय स्थल एवं नदियों का मायका कहा जाता है।

म.प्र. के जल अपवाह प्रणाली को निम्न. भागों में बांट सकते हैं–

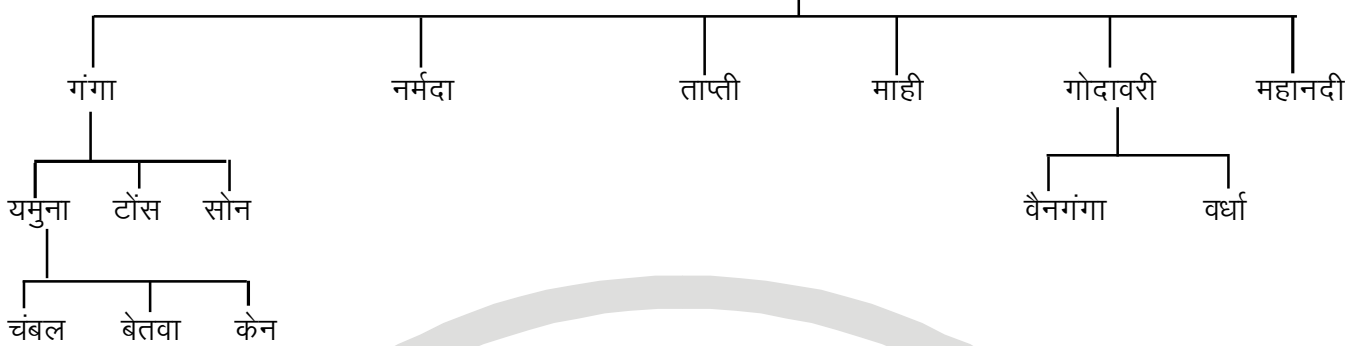

इसके बाद हम प्रत्येक नदी तंत्र एवं उसकी सहायक नदियों को उनके उद्‌गम, क्षेत्र के आधार पर वर्णित करेंगें।

C- नर्मदा घाटी परियोजना पर विस्तृत जानकारीः–

– म.प्र. की जीवन रेखा एक धार्मिक आस्था का केन्द्र नर्मदा एक अंतराज्यीय नदि है जो म.प्र., महाराष्ट्र और गुजरात में बहती है। यह अपनी 41 सहायक नदियों के साथ बहती हुई खंबात की खाड़ी में गिरने जाती है। नर्मदा एवं समस्त सहायक नदियों को मिलाकर 29 बड़ें, 135 मध्यम और 3000 लघु बांध बनाये जा रहे है।

1946 में नर्मदा घाटी विकास पर अनुसंधान करने का प्रस्ताव आया जो 1948 तक चला। अंततः 1959 और 65 के मध्य मुख्य परियोजनों की रूपरेखा तैयार की गई। चूंकि नर्मदा घाटी में अन्य राज्यों की भी भागीदारी हैं। अतः 1979 में नर्मदा जल न्याधिकरण का गठन किया, जिसमें कुल 28 मिलियन एकड़ फिट पानी में से 18.25 maf पानी म.प्र. को 9 maf गुजरात को 5 maf महाराष्ट्र को तथा .25 maf राजस्थान को दिया गया जो यह व्यवस्था 2024–25 तक लागू रहेगी।

नर्मदा परियोजना से 27 लाख 55 हजार हेक्टर भूमि सिंचित की जायेगी और 3400 मेगावाट विद्युत का उत्पादन होगा। नर्मदा घाटी के अंतर्गत निम्न परियोजना–

1. **इंदिरा सागर**– खण्डवा के पुनासा ग्राम में स्थित इस बांध का शिलन्यास तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 23 अक्टूबर 1984 को किया। 1992 से निर्माण प्रारम्भ हुआ 90 मी. ऊंचे तथा 653 मी. लम्बे इस बांध से लगभग 1000 मेगावाट विद्युत उत्पादित होगी।

2. **सरदार सरोबरः**– भड़ूच में स्थित यह नर्मदा का सबसे ऊँचा बांध है। इसमें बनने वाली बिजली का 57प्रतिशत हिस्सा म.प्र. का होगा इसकी ऊँचाई 121.92 मी. कर दी गई है। इस परियोजना से 19 लाख हेक्टर में सिंचाई होगी और 1400 मेगावाट बिजली का उत्पादन होगा।

3. **ओंकारेश्वरः**– खण्डवा के मंधाता में 73 मी. ऊँचा बांध बनाया गया है।

4. **रानी अवंतिबाईः**– यह जबलपुर के बरगी में स्थित हैं इसकी ऊँचाई 69 मी. है। इसके तहत महेश्वर, मान, जोवट परियोजना, अपर नर्मदा परियोजना, तवा परियोजना शुक्ता परियोजना आदि लगभग पूर्ण हो चुकी है।

इस वृहद योजनाओं के लिये विश्व बैंक से ऋण स्वीकृत हुआ है। सरकार पुनवास, बनी करण आदि का कार्य निरंतरत करती जा रही है नर्मदा घाटी परियोजना म.प्र. ही नहीं वरन पड़ोसी राज्यों के लिये भी विकास की धुरी है। लेकिन पर्यावरण पुनवास और भूकम्पी दृष्टि से यह परियोजना संकट में आ गई है। अतः नर्मदा बचाओं आन्दोलन अभी भी संघर्षरत् है। अतः सरकार को विकास के मॉडल पर चिन्तन करने की आवश्यकता है और वृहत योजनाओं की बजाय छोटी योजनायें बनाने की आवश्यकता है।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

अथवा

e-iz ea LokLF; dh fLFkfr vkSj lkFk gh LokLF; {ks ea jkT; ljdkj dh ;ksukvksa dk o.kZ%&

– म.प्र. एक लघु भारत के समान है जिसमें विभिन्न धर्मावलम्बी जनजाति जनसंख्या निवास करती है। म.प्र. में स्वास्थ्य राज्य की विकास हेतु एक अनिवार्य तत्व है। म.प्र. में स्वास्थ्य सेवाएं निम्न. संरचना के तहत संचालित होती है।

1. राज्य स्वास्थ्य सेवाएं।
2. जिला स्वास्थ्य सेवाएं।
3. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र।
4. उपकेन्द्र।
5. चलित अस्पताल। आदि।

इसके बाद हम म.प्र. में राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रोफाइल 2019 के आंकड़ों को लिखेंगें। जो निम्न. आधार पर होंगें–

1. सामाजिक आर्थिक संकेतक।
2. स्वास्थ्य स्थिति संकेतक।
3. मानव संसाधन की स्थिति।
4. स्वास्थ्य संरचना की स्थिति।

राज्य सरकार की स्वास्थ्य के क्षेत्र में निम्न योजनाएं हैं–

1. जननी सुरक्षा योजना।
2. दीनदयाल अन्त्योदय उपचार योजना।
3. दीनदयाल चलित अस्पताल योजना।
4. राज्य बीमारी सहायता योजना। आदि।

विजयाराजे सिंधिया जननी कल्याण बीमा योजना।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

धनवन्तरी योजना। आदि।

इन योजनाओं को समझाकर म.प्र. के स्वास्थ्य की बेहतरी के सुझाव देंगें।

D- म.प्र. का भारत की आजादी में योगदानः–

– 1757 की प्लासी और 1764 बक्सर युद्ध के बाद अंग्रेजों ने अपना साम्राज्यवादी दमन चक्र चलाना शुरू कर दिया। म.प्र. भी इस दमन चक्र की चपेट में आया परन्तु म.प्र. के निवासियों ने वीरता, शौर्य और देश प्रेम की ऐसी मिसाल पेश की अंग्रेजों को अंततः देश छोड़कर जाना पड़ा। म.प्र. में चलाये गये स्वतंत्रता संग्राम आंदोलनों को हम निम्न. भागों में बांट सकते हैंः–

1. 1857 के पूर्व की घटनायें।
2. 1857 की घटनायें।
3. असहयोग आंदोलन के समय घटनायें।
4. झण्डा सत्याग्रह
5. सविनय अवज्ञा आंदोलन
6. जंगल सत्याग्रह
7. चरण पादुका आंदोलन
8. भारत छोड़ों आंदोलन, अन्य गतिविधियां।

1857 के पूर्व की घटनायें– इसका प्रारम्भ 1818 में सिहोर में होत जाता है और चेनसिंह व मैडोक के संघर्ष में चेनसिंह अपने प्राणों की आहूती देते है।

1842 में बुन्देलखण्ड नर्मदा अंचल के राजाओं में अंग्रेजों के विरूद्ध विद्रोह की योजना बनाई, परन्तु विश्वास घात के कारण असफल हुई।

1857 की घटनायें:– 1857 के समय म.प्र. में 3 जून–1857 को नीमच छावनी से विद्रोह प्रारम्भ हुआ जो ग्वालियर, इन्दौर, महू में फैला। रामगढ़ की अवन्ती बाई, जबलपुर के रघुनाथ शाह व शंकर शाह, ग्वालियर–रानी लक्ष्मीबाई व तात्या टोपे, सागर में शेख रमजान आदि ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया। परन्तु संशाधनों की कमी और विश्वासघातियों के कारण असफल हो गया।

असहयोग आंदोलन के समयः– असहयोग आंदोलन के दौरान सेठ गोविंद दास, प्यारेलाल, हरी सिंह गौर, हरि विष्णु कामथ आदि ने इस आंदोलन को बढ़ाया।

झण्डा सत्याग्रह– 1923 में जबलपुर में सुन्दरलाल शर्मा, सुभद्राकुमारी चौहान, नरहरि अग्रवाल आदि ने इसका नेतृत्व किया और टाऊन हॉल में दो बार झण्डा फहराया गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन– 6 अप्रैल–1930 को गांधी जी ने नमक बनाकर सविनय अवज्ञा प्रारम्भ किया। तब जबलपुर में से गोविंददास ने जबलपुर में रानीदुर्गावती की समाधि तक पद यात्रा कर इस सत्याग्रह की म.प्र. की शुरूआत की। इसके अलावा कटनी, रामपुर, मण्डला, दमोह, इन्दौर, भोपाल आदि ने विद्रोह हुआ जिसने रविशंकर शुक्ला, माखनलाल चतुर्वेदी आदि ने प्रमुख भूमिका निभाई।

जंगल सत्याग्रह– 1930 में सिवनी में टुरियां जंगल सत्याग्रह और बैतूल के घोड़ा डोंगरी में जंगल सत्याग्रह हुआ। सिवनी में इसका नेतृत्व–दुर्गाशंकर मेहता और घोड़ा डोंगरी में गंजान सिंह कोरकू ने इसका नेतृत्व किया।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

चरण पादुका नरसंहार– 14 जनवरी 1934, उर्मिला नदी के किनारे, मकर संक्रांति के दिन अंग्रेज अधिकारी ने बिना किसी चेतावनी के लोगों पर अंधाधुंध गोली चलाई। इसे म.प्र. का जलिया वाला बाग कहते है।

भारत छोड़ो आंदोलन– इसकी शुरूआत म.प्र. के विदिश से हुई बैतूल में महादेव तेली जबलपुर गुलाब सिंह, मण्डला में उदय चन्द्रजैन, घोड़ा डोंगरी–विष्णु गौंड़ आदि ने इस आंदोलन को गति प्रदान की।

अन्य आंदोलन– 1932 पंजाब मेल हत्याकाण्ड, खण्डवा स्टेशन में अंग्रेजो को मार दिया गया जिस कारण देव नारायण व यशंवत सिंह को फांसी दी।

1938– सोहाबल नरसंहार।

1941– श्रमिक व किसानों की सहादत।

इसके अलावा कांग्रेस का 1939 का अधिवेशन म.प्र. के त्रिपुरी में हुआ, इस प्रकार म.प्र. ने आजादी के प्रत्येक आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यहां कि शहरी का ग्रामीण, अमीर गरीब, आदिवासी समाज के प्रत्येक वर्ग ने इसने भाग लेकर अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी। और अतः 15 अगस्त 1947 को आजादी मिली और 1 नवम्बर 1956 वर्तमान म.प्र. का गठन हुआ।

अथवा

म.प्र. में वनों का वर्गीकरणः–

– वन किसी भी स्थान के पर्यावरण को संतुलित करने में साथ–साथ अर्थव्यवस्था के लिये भी उपयोगी होते है। वन अनुसंधान संस्थान देहरादून के अनुसार म.प्र. में 94.69 हजार पवर्ग किमी में वन क्षेत्र है। जो प्रदेश का 30.72 प्रतिशत क्षेत्र में वन हैं जो कि राष्ट्रीय औसत अधिक एवं पर्यावरण संतुलित बनाये रखने के निकट है, परन्तु प्रदेश के वन क्षेत्र के फैलाव में एक रूपता नहीं है। म.प्र. के पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्र में विश्व वन पाये जाते है।

म.प्र. के वनों को मुख्यतः तीन पेटियों में बांटा का सकता हैः–

1. विध्यन कैमूर क्षेत्र।
2. मुरैना शिवपुरी क्षेत्र।
3. नर्मदा का दक्षिणी क्षेत्र।

म.प्र. वन संपदा की दृष्टि से सम्पन्न प्रदेश है म.प्र. में वन उष्ण कटिबंधीय वन है जिन्हें तीन भागों में बांटा जा सकता हैः–

1. उष्णकटिबंधीय पर्णपाती वन
2. उष्ण कटिबंधीय अर्द्धपर्णपाती वन
3. उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन।

1. **उष्णकटिबंधीय पर्णपाती**–इस प्रकार के वन 50 से 100 सेमी वाले वर्षा वाले क्षेत्र में मिलते है। यह सागर, छिन्दवाड़ा, जबलपुर, छतरपुर, पन्ना, बैतूल, होशंगाबाद, सिवनी आदि।

   इसमें मुख्यतः सागौन, शीशम, नीम, पीपल, आदि के वृक्ष पाये जाते है। यह वृक्ष ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में अपनी पत्ति गिरा देते है।

2. **उष्ण कटिबंधीय अर्द्ध पर्णपाती वनः**– ये वन 100 से 125 सेमी वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं। ये वन सीधी सिंगरौली, शहडोल, मण्डला, बालाघाट जिलों में फैले हुये है इनमें मुख्यतः शाल, सागौन, जामुन, बीजा आदि शामिल है।

3. **कटीले वनः**– ये वन कम वर्षा वाले क्षेत्रों में मिलते हैं। ये ग्वालियर, श्योपुर, मन्दसौर, भिण्ड, मुरैना आदि जिले में पाये जाते है, जैसे– खेर, बबूल, पलास आदि।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

शासकीय आधार पर वनों के तीन प्रकार हैं:–

1. आरक्षित
2. संरक्षित।
3. अवर्गीकृत

म.प्र. में वनों की अवैध रूप से कटाई वन प्रबंधन का सुव्यवस्थित न होना, वनों में आग लगना, अवैध पशुचारण आदि की वजह से हमारे जीवन रक्षक वनों का भविष्य संकट में पड़ गया है। इससे न केवल पर्यावरण संकट प्रभावित होगा वरण सारा मानव जगत संकट में पड़ जायेगा। अतः म.प्र. सरकार इन संकटों से बचने के लिये वनों का राष्ट्रीय करण कर दिया है। जिससे उनके समुचित प्रबंधन में सहायता मिलेगी तथा वन संरक्षण के साथ–साथ राजस्व की प्राप्ती भी होगी।

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone